B.A. PART - 1

हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम-पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न :- आदिकाल के प्रमुख रचनाकार गोरखनाथ एवं उनकी रचनाओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालें ?

उत्तर :- गोरखनाथ को नाथ साहित्य का आरम्भ करने वाला माना जाता है, वे मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य थे, जो नाथपंथी न होकर सिद्ध सम्प्रदाय में दीक्षित थे। गोरखनाथ ने अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के आचरण का विरोध करते हुए सिद्धों के मार्ग का विरोध किया। गोरखनाथ का समय राहुल सांकृत्यायन 845 ई० मानते हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भी उन्हें नौवीं शताब्दी का मानते हैं किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं डॉ० रामकुमार वर्मा उन्हें 13 वीं शती का मानते हैं। डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने उन्हें 11 वीं शती का माना है। नवीन अनुसंधानों से शुक्ल जी के मत की पुष्टि हुई है तथा यह बात सामने आई है कि गोरखनाथ का साहित्य 13 वीं शती के प्रारम्भ का है।

गोरखनाथ जी का समय जिस प्रकार विवादास्पद रहा है, उसी प्रकार उनकी रचनाओं की संख्या भी विवादास्पद है। कुछ विद्वान जहाँ उनके द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या 40 बताते हैं, वही डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने केवल 14 रचनाओं को ही गोरखनाथ द्वारा रचित स्वीकार किया है। इन रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं -

1. सबदी 2. पँद 3. प्राणसंकली 4. सिष्यादरसन 5. नरवैबोध 6. अभैमात्राजोग 7. आतम-बोध 8. पन्द्रह तिथि 9. सप्तवार 10. मछीन्द्र गोरखबोध 11. रोमावली 12. ग्यान तिलक 13. ग्यान चौंतीसा 14. पंचमात्रा।

इन रचनाओं का संकलन डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने "गोरखबानी" नाम से किया है। गोरखनाथ से पहले के अनेक सम्प्रदाय शाक्त, बौद्ध, जैन, वैष्णव योगमार्गी नाथ-पंथ

में आ मिले। उन्होंने अपनी कृतियों में इन्द्रिय निग्रह, गुरु महिमा, प्राण साधना, वैराग्य, कुण्डलिनी जागरण, मनः साधना, शून्य समाधि आदि का व्यापक वर्णन किया है। इसलिए आचार्य शुक्ल ने इसे साहित्य की वस्तु नहीं माना, किन्तु आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का मत इससे भिन्न है। उक्त विषयों के अतिरिक्त उसमें जीवन की अनुभूतियों का भी विशद चित्रण है। अतः इन्हें साहित्य में समाविष्ट करना उपयुक्त है। गोरखनाथ का प्रभाव परवर्ती भक्तिकाल में कबीर आदि संत कवियों पर देखा जा सकता है।

गोरखनाथ ने ही षट्चक्रों वाला योगमार्ग हिन्दी साहित्य में प्रवर्तित किया। हठयोग साधना से शरीर और मन को शुद्ध करके कुण्डलिनी जाग्रत करके शून्य में समाधि लगाकर योगी ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। वह कहते हैं कि धीर पुरुष का चित्त कभी विकारग्रस्त नहीं होता, भले ही विकार के साधन सामने उपलब्ध हों। —

नौलख पातरि आगें नाचैं, पीछे सहज अखारा।
ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा।।

गोरखनाथ का प्रभाव परवर्ती संत काव्य पर न केवल विषय-वस्तु की दृष्टि से पड़ा अपितु उनकी भाषा, शैली, छंद योजना भी गोरखनाथ से प्रभावित है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न। गोरखनाथ एवं उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालें?

पताः→
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C)(B.R.A.B.U.m)
मो०न० - 7909046087
दिनांक - 16 /02/2023